मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

डी0 ई0 आई0 (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग, आगरा से

चित्रकला विषय में पी–एच. डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

रुपरेखा।

2019

शोध निर्देषक :–

प्रो. अश्विनी कुमार शर्मा

ड्राईंग एण्ड पेण्टिंग विभाग

कला संकाय

शोधार्थिनी :–

श्रीमती मोनिका राजपूत

ड्राईंग एण्ड पेण्टिंग विभाग

कला संकाय

संकाय प्रमुख :–

प्रो. जे0 के0 वर्मा

अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग,

कला संकाय।

डी0 ई0 आई0, डीम्ड विश्वविद्यालय

दयालबाग, आगरा।

विभागाध्यक्ष :–

प्रो. रागिनी रॉय

ड्राईंग एण्ड पेण्टिंग विभाग,

कला संकाय।

डी0 ई0 आई0, डीम्ड विश्वविद्यालय

दयालबाग, आगरा।

मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

विषय सूची :—

शोध संकल्पना

संम्बन्धित साहित्य का पुर्नावलोकन

परिकल्पना

उददेश्य

चर

कार्य प्रणाली :—

1—अनुसंधान अभिकल्प

2—प्रदत्त संकलन

अ— प्राथमिक स्त्रोत

ब— द्वितीय स्त्रोत

3— प्रतिदर्श आकार

4—प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया/ प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि

5—सीमाएँ

निष्कर्ष

शोध संकल्पनाः—भारत में काव्य और चित्रकला के सम्बन्ध तथा आपस में सहयोग का एक पुराना इतिहास है। बौद्ध और जैन सचित्र ताड़पत्रीय ग्रंथ तथा संस्कृत के विभिन्न ग्रंथ जैसे रामायण, महाभारत, भागवत, गीतगोविन्द और हिन्दी के सूरसागर, रसिकप्रिया, बिहारी सतसई, बारहमासा, आदि का चित्रण चित्रकला के इतिहास में ही नहीं बल्कि काव्य जगत और इतिहास के क्षेत्र में भी अध्ययन के विस्तृत आयाम उजागर करता है। काव्य चित्रण के लिए देश, काल और परिस्थिति के अनुसार कलाकार ने समय—समय पर विभिन्न माध्यम चुने हैं।

काव्य और चित्रकला के सम्बन्ध निर्धारण से यह बात स्पष्ट होती है कि दोनों में अनन्योश्रय सम्बन्ध रहा है। काव्य को आधार बनाकर चित्र बनाये जाते रहे हैं और चित्रों से कवियों की भावधारा उद्वेलित होती रही है। भारतीय चित्रकला की विशेषता ही यह रही है कि उसने काव्यगत शब्द चित्रों को साकार कर दिया है।

इतना घनिष्ट सम्बन्ध होने पर भी दोनों कलाएँ अलग हैं। काव्य चित्र नहीं हो सकता और चित्र काव्य नहीं कहा जा सकता। उनकी अपनी सीमा—रेखाएँ हैं, माध्यम अलग हैं। एक में शब्दाधार है, तो दूसरी में रेखा और रंग। एक भावों एवं विचारों की सरस निर्झरणी है, तो दूसरी विभाव, अनुभावों के सर्म्मूत बन्धन का माध्यम। एक का सम्बन्ध समय की गति शीलता से है तो दूसरी का स्थान से है। एक अन्तर्मुखी भावों के अंकन का समर्थ माध्यम है तो दूसरी बहिर्मुखी चित्रण के लिए विशेष उपयोगी।

राजस्थानी शैली में मेवाड़ शैली का स्थान विशेष माना जाता है। कई उदाहरण एवं पांडुलिपियों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है, कि 16वीं शताब्दी में राजस्थानी शैली ने अपनी जिन नवीन शैलियों का विकास किया था, उसमें मेवाड़ प्रमुख था और इस शैली का विकास मुगलों के उदय काल तक बिना किसी अवरोध के निरंतर होता रहा। इस शैली के अर्न्तगत धार्मिक चित्र, विशेषतः हिन्दू देवी—देवताओं से सम्बन्धित चित्र बने। इनमें चित्तौड़ के प्रसिद्ध चित्रकार मनोहर द्वारा रचित रामायण की एक प्रति भी प्राप्त है, जो 1648 ई0 में बनी थी और अब प्रिन्स ऑफ वेल्स म्यूजियम में सुरक्षित है।

राम एवं कृष्ण अवतार के जन्म से लेकर उनके जीवन की विविध लीलाओं सम्बन्धी विषय–वस्तु को आधार बनाकर प्रेम, समर्पण, श्रृद्धा, उत्सर्ग, श्रृंगार इत्यादि भावनाओं को व्यक्त करने वाले अनेकानेक चित्रों का सृजन मेवाड़ में हुआ। इस प्रकार के चित्रों को पौराणिक साहित्य, रामायण एवं महाभारत तथा मध्यकाल में रचे गये भक्तिरस एवं श्रृंगार रस के साहित्य ने खूब सहारा दिया और मेवाड़ के चित्रकारों ने साहित्यिक रचनाओं के वर्णनों को बखूबी अपने चित्रों में प्रबलता के साथ उतारा।

आर्ष रामायण के चित्र, चित्रकार मनोहर एवं साहिबद्दीन द्वारा सन् 1649 ई0 से सन् 1653 ई0 के मध्य चित्रित किये गये। रामायण का प्रथम चित्र संम्पुट चित्रकार मनोहर ने महाराणा जगतसिंह के राज्य–काल में चित्रित किया। महाराणा जगतसिंह (प्रथम) वैष्णव धर्म के परम उपासक थे। आर्ष रामायण के इन चित्रों में राम और लक्ष्मण को राजपूत क्षत्रिय के रूप में चित्रित किया गया है। उनके हाथों में तलवार एवं अन्य हथियार भी दिखाये गये हैं। ऐसा माना जाता है कि राक्षसों का अंकन मुगल शासकों के अनुरूप किया गया है। पुरूषों की दाढ़ी एवं चेहरों का मुगल शैली में चित्रण होने से यह स्पष्ट हो जाता है कि राम और रावण के संघर्ष का सन्दर्भ क्षत्रिय एवं मुगलों के मध्य हुए संघर्ष का कोई संकेत है। ये चित्र मनोहर एवं साहिबद्दीन की सम्मिलित चित्रण पद्वति के अच्छे उदाहरण हैं। मनोहर साहिबद्दीन का सहायक था यही कारण है कि मेवाड़ शैली में रामायण के चित्र इन दोनों ही चित्रकारों द्वारा चित्रित किये गये। ये चित्र विभिन्न संग्रहालयों में अलग से पहचाने जा सकते हैं। मनोहर का उल्लेख प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम, बम्बई के चित्र सम्पुट में है तथा साहिबद्दीन का ब्रिटिष म्यूजियम, लन्दन के चित्र पुष्पिका में देखा जा सकता है।

आर्ष रामायण के चित्रों में ऋषियों को कृश आकृति में चित्रित किया है। जिनकी तपस्या के कारण हड्डियाँ बाहर निकलती हुई दिखायी गयीं हैं। ऋषियों के बालों की सजावट अपने ढंग से अंकित है। चित्र के फलक–संयोजन में अवकाश (स्पेस) के महत्व को चित्रकार ने भलिभाँति समझा है। भीड़ के दृश्यों में इसे स्पस्ट करने का प्रयास किया है। उदाहरर्णाथ प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय, बम्बई में सुरक्षित रामायण 1649 ई0 के चित्र 'अयोध्या लौटते हुए दशरथ' के दृश्य में

भीड़ की उचित अभिव्यक्ति के साथ नारियों को भी महल के द्वार पर चित्रित किया गया है। इनमें मानवाकृतियाँ नियंत्रित समूहों में अंकित हैं। दशरथ के साथ आने वाले घुड़सवार एवं पैदल सैनिकों को अलग दिखाया है। कई चित्रों में एक ही फलक को दो भागों में विभाजित कर, विभिन्न काल एवं स्थान की अभिव्यक्ति करने का अच्छा प्रयास किया गया है। अरण्य–काण्ड में साधुओं के साथ आ़श्रम जाते हुए राम, लक्ष्मण व सीता में, पानी में तरंगित रेखाओं के अंकन से चित्र में गति उत्पन्न की गयी है।

वस्तुतः महाराणा जगतसिंह का काल मेवाड़ में ललित–कलाओं के विकास की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ काल था, फिर भी इस काल में अन्य कलाओं की तुलना में चित्रकला की विशेष प्रगति हुई और उसमें पूर्ण परिपक्वता का विकास हो गया। महाराणा जगतसिंह के शासन काल के चित्र सत्रहवीं शताब्दी के मेवाड़ के समाज की धार्मिक–सांस्कृतिक रूचि, सौन्दर्य–बोध, वस्त्राभूषण के प्रयोग, मेवाड़ की समृद्धि, मनोरंजन, आमोद–प्रमोद इत्यादि की ओर भी इंगित करते हैं। डॉ0 मोतीचन्द्र ने रामायण से सम्बद्ध चित्रों को राजपूतों की सामाजिक, सांस्कृतिक स्थितियों, रहन–सहन, वस्त्राभूषण सम्बन्धी जानकारी देने के सन्दर्भ में उपर्युक्त माना है। ये चित्र मात्र राजपूतों के जीवन व्यवहारों को ही नहीं, समसामयिक मेवाड़ (राजस्थान) के समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन व्यवहारों को भी अभिव्यक्त करते हैं।

अतः महर्षि वाल्मिकी कृत तथा सन् 1649 ई0 से सन् 1653 ई0 तक चित्रकार साहिबद्दीन एवं मनोहर द्वारा चित्रित आर्ष रामायण के इन चित्रों की ओर कला मर्मज्ञों एवं जन साधारण का ध्यान आकर्षित करने के लिए ही मैंने "मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" विषय को अपने शोध कार्य हेतु चयनित किया है। रामायण आधारित इन चित्रों में राम के जीवन से जुड़े विभिन्न प्रसंगों, समसामयिक समाज एवं लोगों, उनकी भाव भंगिमाओं, मुद्राओं, वस्त्राभूषणों एवं लौकिक मुद्राओं के अकंन, प्रकृति के इन्द्रधनुषी वैभव और विषय के धार्मिक, सामाजिक अंकन इत्यादि के यथा क्षमता अध्ययन कर इन चित्रों के कलागत एवं सौन्दर्यात्मक महत्व को कला समीक्षकों के समक्ष प्रस्तुत करना ही मेरे इस शोध कार्य का उद्देश्य

है। राम का चरित्र मेरे लिए एक आदर्श रहा है तथा मुझे हमेशा प्रेरित करता है। राम मेरे आराध्य होने के कारण मैं इस विषय का गहराई से अध्ययन करने के लिए प्रेरित रही हूँ।

विभिन्न रसों, कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक गुणों से युक्त इन लघु चित्रों का अध्ययन अवश्य ही कला के नये आयाम स्थापित करेगा जो भविष्य में शोधार्थियों और इस विषय से सम्बन्ध रखने वालों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकनः—

किसी भी विषय पर शोधकार्य करने से पहले उससे संबधित तथ्यों का संकलन आवश्यक होता है। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण शोधकार्य पर पूर्व में किया शोध या उससे संबधित साहित्य महत्वपूर्ण होता है जिसका पुनरावलोकन करके वर्तमान शोध को सारगर्भित एवं उपयोगी बनाया जा सकता है।

मैंने अपने शोध विषय चयन हेतु विभिन्न संग्रहालयों का भ्रमण किया। संग्रहालयों में संग्रहित प्राचीन साहित्य के माध्यम से राजस्थानी शैलियों के बारे में पढ़ा। जिससे मुझे मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण लघु चित्रों के बारे ज्ञात हुआ। इन रामायण लघु चित्रों का संग्रह भारत में, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, राजस्थान में तथा प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय, मुम्बई में संग्रहित है। इन लघु चित्रों की श्रृंखला ने मुझे अत्यधिक प्रभावित तथा आकर्षित किया। इन लघु चित्रों का और अधिक अध्ययन करने के लिए मैंने प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय, मुम्बई का भी भ्रमण किया एवं पुस्तकालयों में पुस्तकों का अध्ययन किया।

मैंने अपने शोध को तर्कपूर्ण तथा महत्वपूर्ण बनाने के लिए कुछ उल्लेखनीय पुस्तकों और साहित्य का अध्ययन किया जैसे—जयसिंह नीरज द्वारा लिखित—राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं राजशेखर व्यास की—मेवाड़ की कला और स्थापत्य, जिनके द्वारा मैंने अपने विषय पर ध्यान केन्द्रित किया और राजस्थान की संस्कृति को जाना। इसके अतिरिक्त मैंने राधाकृष्ण वशिष्ठ की एक रचना—मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा तथा Moti Chandra-Mewar Painting का अध्ययन किया। जिसमें मैंने मेवाड़ के कलाकारों तथा उनके चित्र बनाने के तरीकों व प्राचीनता को जाना व समझा जिससे मुझे मेवाड़ की चित्रकला के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त

मैंने Satya Prakash-Rajasthani Miniature व जयसिंह नीरज की–राजस्थान की लघुचित्र शैलियों का अध्ययन कर लघु चित्र शैलियों के विषय में अध्ययन किया व सम्बधित जानकारी प्राप्त की साथ ही स्वदेश मल्होत्रा की–मध्य युगीन उत्तर भारत में रामकथा चित्रावली व जी0 एन0 शर्मा–एन इलेस्ट्रेटेड आर्ष रामायण मेन्यूस्क्रिप्ट–द अडियार लाइब्रेरी बुलेटिन को पढ़ा, जिससे मैंने आर्ष रामायण को जाना व सम्बन्धित जानकारी को प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त विभिन्न वेबसाइट्स का भी अवलोकन किया, जिसके अध्ययन से मुझे शोध विषय में सरल वर्गीकरण करने के साथ ही इसे पूर्ण करने में सफलता प्राप्त होगी।

परिकल्पनाः–

प्रत्येक अनुसंधान कार्य की सफलता व उसकी वस्तुनिष्ठता हेतु परिकल्पना की अत्यंत आवश्यकता होती है। जिससे हम अपने शोध के उद्देश्य को स्पष्ट रुप से प्राप्त कर सकें व शोध विषय पर केन्द्रित रह सकें।

कला के अनेक विषयों में से भारतीय लघु चित्रों में,रामकथा पढ़ने पर इस विषय पर बने राजस्थानी लघु चित्रों ने मेरी जिज्ञासा को और अधिक बढ़ाया। लघु चित्र बहुत सुंदर व आकर्षक रंग योजना, हस्त निर्मित और आकार में छोटे हैं। इनके रंग भी खनिज रंगों, कीमती पत्थर, नील, शंख व शुद्ध सोने और चाँदी से निर्मित किये जाते थे। आज भी ये रंग कुछ चित्रकार प्रयोग में लेते हैं जो पूर्व की निम्न प्रकार की शैलियों में देखने को मिलते हैं– पाल, जैन, मुगल, राजस्थानी तथा पहाड़ी शैली इत्यादि।

मैं अपने शोध अध्ययन में राजस्थानी शैली की उपशैली मेवाड़ में बने रामायण आधारित, लिखित साहित्य पर बने आर्ष रामायण लघु चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करुँगी, जो मेवाड़ की कला एवं सौंदर्य का उत्कृष्ट उदाहरण हैं तथा इस कला के प्राचीन स्वरुप को भी सबके समक्ष लाने का पूर्ण प्रयास करुँगी।

उद्देश्यः–

एक शोधकर्ता को अपना शोध प्रारम्भ करने से पूर्व अपने निर्धारित उद्देश्य का सर्वप्रथम ज्ञान होना चाहिये कि वह किस उद्देश्य से शोध कार्य कर रहा है।

मेवाड़ी लघु चित्रों में रामायण काव्य की विवेचना करना व प्रकाश में लाना मेरा उद्देश्य होगा।

मेवाड़ शैली चित्रित आर्ष रामायण पर आधारित चित्रण किस प्रकार से हुआ है? उसके बारे में जानना मेरा उद्देश्य होगा।

विभिन्न मेवाड़ शैली की पुस्तकों में आर्ष रामायण आधारित चित्रण किस प्रकार से हुआ है? उसके बारे में जानना मेरा उद्देश्य होगा।

विभिन्न मेवाड़ शैली की पुस्तकों में से आर्ष रामायण पर हुए कार्य को अपने शोध द्वारा एक सूत्र में बांधना भी मेरा उद्देश्य होगा।

मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना ही मेरे शोध का मुख्य उद्देश्य है जो भविष्य में शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण सिद्व होगा।

चरः–

1. कलाकार
2. कला शिक्षक
3. कला विद्यार्थी
4. कला प्रशंसक एवं कला समीक्षक
5. सहपाठी
6. संग्रहालय
7. कला संग्रहकर्ता
8. पुस्तकें
9. इन्टरनेट

कार्य प्रणालीः–

अनुसंधान अभिकल्प :— मेरा शोध कार्य मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों के विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित होगा।

प्रदत्त संकलनः— तथ्यों का एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित।

1. **प्राथमिक स्त्रोतः**— संग्रहालयों में संग्रहित आर्ष रामायण के लघु चित्रों का मौलिक चित्रण एवं सम्बन्धित स्थान का भ्रमण।
2. **द्वितीयक स्त्रोतः**—लेख, पुस्तकें, प्रकाशित पत्र—पत्रिकाएँ, समाचार पत्र व वेबसाइटस।

प्रतिदर्श आकारः—मेरे द्वारा आर्ष रामायण के 100—125 लघु चित्रों का अध्ययन किया जायेगा। यह लघु चित्रकला परम्परा का प्रतिनिधित्व करेंगे।

प्रदत्त संकलन की प्रक्रियाः—मेरी प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया कलाकृतियों, चर्चाओं, विवेचनाओं एवं विश्लेषण पर आधारित होगी।

सीमाः—प्रत्येक शोध कार्य की एक सीमा होती है। मैं शोध कार्य की सीमा अवधी, एकत्रित प्रदत्त के आधार पर कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूँगी।

निष्कर्षः— इस शोध कार्य से उपरोक्त सभी प्रक्रियाओं के आधार पर मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों की सौन्दर्यात्मक व कलात्मक अध्ययन की मौलिकता को प्रस्तुत करने में सफलता होगी और मैं शैली के विश्लेषणात्मक पक्ष का अध्ययन करने का प्रयास करूँगी।

आधुनिक युग में प्रसांगिकताः— मेरे द्वारा मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों के विषय तथा कलात्मक पक्ष का आधुनिक जगत में योगदान, के महत्वपूर्ण पक्ष को स्पष्ट किया जायेगा, जिसके परिणाम स्वरूप मेरा शोध प्रबन्ध भविष्य के शोधार्थियों हेतु उनके ज्ञानवर्धन में सहायक होगा और ये मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्र आगे आने वाले आधुनिक कलाकरों को पूर्ण रूप से प्रेरित करते रहेंगे।

मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

विषय सूची

भूमिका :– भारतीय परिप्रेक्ष्य में रामायण लघु चित्रों का उद्भव एवं विकास।

आर्ष रामायण – एक सिंहावलोकन।

प्रथम अध्याय :– मेवाड़ की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि।

1.1 मेवाड़ शैली का उद्भव, विकास एवं प्रमुख केन्द्र।

द्वितीय अध्याय :– राजस्थान की प्रमुख शैलियों में रामायण का चित्रण।

2.1 मेवाड़, उदयपुर, नाथद्वारा, प्रतापगढ़।

2.2 मारवाड़, जोधपुर, बीकानेर, नागौर, किशनगढ़।

2.3 हाड़ौती, बूँदी, कोटा, झालावाड़।

2.4 ढूँढाड, जयपुर, अलवर।

तृतीय अध्याय :– मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण का विषय वस्तु अनुसार वर्गीकरण।

3.1 मेवाड़ शैली की सम्पूर्ण आर्ष रामायण का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

चतुर्थ अध्याय :– मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों की कलातत्वों के आधार पर समीक्षा एवं मूल्यांकन, विशेषताएं एवं चित्रकार।

पंचम अध्याय :– मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों का सामरिक महत्व –शैक्षिक एवं सांस्कृतिक आधार पर।

उपसंहार :– राजस्थान की प्रमुख शैलियों में रामायण एवं आर्ष रामायण का तुलनात्मक अध्ययन।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :– हिन्दी

अंग्रेजी

शोध पत्र–पत्रिकायें

समाचार पत्र

वेबसाइट

चित्रसूची

परिशिष्ठ :– 1–कलाकारों तथा विभिन्न समीक्षकों के विचार

2–तकनीकी शब्दों का अर्थ।

अनुसंधान अभिकल्प :–

भूमिका–के अर्न्तगत मैं भारतीय परिप्रेक्ष्य में रामायण लघु चित्रों के उद्‌भव एवं विकास पर चर्चा करुँगी व आर्ष रामायण का एक सिंहावलोकन प्रस्तुत करुँगी।

प्रथम शोध अध्याय–के अर्न्तगत मैं मेवाड़ की ऐतिहासिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि, मेवाड़ चित्र शैली, उसके उद्‌भव, विकास एवं मुख्य केन्द्रों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करुँगी ।

द्वितीय अध्याय–में, मैं राजस्थान की विभिन्न प्रमुख शैलियों में रामायण का अध्ययन करूँगी। जिसमें मेवाड़, मारवाड़, हड़ौती तथा ढूँढाड मुख्य रुप में सम्मिलित होंगी।

तृतीय अध्याय–के अन्तगर्त आर्ष रामायण का विषय वस्तु अनुसार वर्गीकरण करके मेवाड़ शैली की सम्पूर्ण आर्ष रामायण का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास करुँगी।

चतुर्थ अध्याय–में, मैं मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों की कला–तत्वों के आधार पर समीक्षा एवं मूल्यांकन के साथ चित्रों की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाष डालने हुए चित्रकारों का भी उल्लेख करुँगी।

पंचम तथा अन्तिम अध्याय–में, मैं मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों में शैक्षिक एवं सांस्कृतिक आधार पर सामरिक महत्व का वर्णन करुँगी।

उपसंहार–उपसंहार के अर्न्तगत राजस्थान की प्रमुख शैलियों में रामायण एवं आर्ष रामायण का तुलनात्मक अध्ययन पर चर्चा करुँगी।

दिनाँक :– शोधछात्रा :–

पौराणिक ग्रन्थ

१. आध्यात्म रामायण – हिन्दी अनुवाद सहित, अनुवादक–मुनिलाल, मोतीलाल जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं.2024 चर्तुदश संस्करण।

२. कल्याण – सौर मार्गशीर्ष, वि. सं. 2064, श्रीकृष्ण–सं.5233, नवम्बर 2007 ई. गीता प्रेस गोरखपुर।

३. पुराण – श्रीमद्भागवत्, सुधा सागर, गीता प्रेस गोरखपुर, सं. 2067।

हिन्दी संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. अग्रवाल वासुदेव शरण – भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन, बी. 1/54,अमेठी काठी, नगवा वाराणसी, प्रथम संस्करण–1966।

२. गुरूजी, साने – भारतीय संस्कृति, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, दिल्ली, 1953 ।

३. गैरोला, वाचस्पति – भारतीय चित्रकला, मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद, 1963 ।

भारतीय संस्कृति और कला, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ ।

भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त परिचय, मित्र प्रकाशन प्रा. लि. इलाहाबाद, 1963 ।

४. गोस्वामी, प्रेमचन्द्र – भारतीय कला के विविध स्वरुप, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर, 1997 ।

५. गौतम, आर. बी. – राजस्थान की समसामयिक कला, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1989 ।

६. टण्डन, आर. एन. – भारतीय चित्रकला की रुपरेखा, भारत भारती प्रकाशन, मेरठ, 1962 ।

७. दास, राय कृष्ण – भारत की चित्रकला, भारती भण्डार, प्रयाग, 2007 ।

भारतीय की चित्रकला, नागरी प्र. सभा, वाराणसी, 1939 ।

८. दास, राय कृष्ण व राय, आनन्द कृष्ण – मध्यकालीन चित्र शैलियाँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथमसंस्करण, 1962 ।

भारत की चित्रकला, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 1966 ।

९. द्विवेदी, प्रेमशंकर – भारतीय साहित्य एवं कला में श्री गणेश, कला प्रकाशन, बी. 33/33, ए–1, न्यू साकेत कॉलोनी, बी. एच. यू., वाराणसी–5, 2007 ।

१०. द्विवेदी, प्रेमशंकर व भारद्वाज, राधाकृष्ण – भारतीय चित्रकला में व्यक्ति चित्रण, कला प्रकाशन, बी. 33/33 ए–1, न्यू साकेत कॉलोनी, का. हि. वि. वि., वाराणसी–5, 1966 ।

११. नीरज, जयसिंह – राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1972 ।

राजस्थान की लघु चित्र शैलियाँ, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1972 ।

१२. मल्होत्रा, स्वदेश – मध्ययुगीन उत्तर भारत में राम कथा चित्रावली, भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद–224001, पृथम संस्करण, 2003 ।

१३. मुकर्जी, राधकमल – भारतीय कला का विकास, सरस्वती प्रेस,

इलाहाबाद, 1964 ।

१४. रामनाथ – मध्यकालीन भारतीय कलाएं और उनका विकास, राजस्थान हिन्दीग्रन्थ अकादमी, ए–26/2 विद्यालय मार्ग, तिलक नगर, जयपुर–4, प्रथम संस्करण–1973 ।

१५. वशिष्ठ, राधकृष्ण – मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, यूनिक ट्रेडर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर, 1953।

१६. विजयवर्गीय, रामगोपाल – राजस्थान की चित्रकला, कला मंदिर, भारती प्रेस, जयपुर, 1953 ।

१७. विद्यालंकार, सत्यकेतु – भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास, सरस्वती सदन, मंसूरी।

१८. व्यास, ए. जी. – राजस्थान की चित्रकला–एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण,
राजस्थान शोध–संस्थान, जोधपुर, 1960।

१६. व्यास, राजशेखर – मेवाड़ की कला और स्थापत्य, राजस्थान प्रकाशन, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर–2, संस्करण–1988 ।

२०. श्रीवास्तव, प्रेम कुमारी – काशी से प्राप्त चित्रित पाण्डुलिपियाँ, (रामचरित मानस), कला प्रकाशन, बी. 33/33 ए–1, न्यू साकेत कॉलोनी, बी. एच. यू. वाराणसी–5, 2008 ।

BIBLIOGRAPHY IN ENGLISH

1. Annand, M. R. – Album of Indian painting, Delhi, 1973.

2.Aecher, W. G. – Indian paintings from Rajsthan, London, 1957.

3. Barrett, D. and Gray, B. – Painting of india, Geneva, 1963.

4. Basham, Shri A. L. – Studies in Indian history and culture, Callcutta, 1964.

5. Bhatnagar, Nindhi – Changing phases of mewar painting , Panchsheel Prakashan, Jaipur, 2000.

6. Brown, Percy _ Indian Painting, Y.M.C.A Publication House Culcutta, 1947.

7. Chandra, Moti _ Mewar Painting, lalit kala academy, New Delhi, 1957.

8. Chatanya, Krishan _ A history of India Painting, Rajsthani tradition, Abhinav Publications, Delhi 1982.

9. Gray, Basil _ Rajput Painting, Faber and Faber, London, 1938.

10. Krishnarao, Andhara _ Choronology of Mewar Painting, Agam Kala Prakadhan, Delhi,Shridhar1987

11. Mehta, N.C. _ Studies in Indian Paintings, D.R. Taraporvala song & Co. Bombay, 1926.

12. Neeraj, Jai Singh _ Splendour of Rajasthani Painitng, Shkti Malik, Abhinav Publications, E-37, Hauz khas, New Delhi,

13. Prakash Satya _ Rajasthani miniature, lalit kala academy, jaypur, 1958

14. Randhawa, M.S. & _ Indian Painting, Vakils feffer & Simons Ltd. Bombay, 1980. Galbraith, J.K

15. Sharma, O.P _ Indian Paintings and Drawings, Jawahar Kala Kendra, Jaipur, 2006.

16. Stella, Kramrish _ The Art of Indian through the ages, Phaidon Press, London, 2nd 1955.

17. Topsfield, Andrew _ Paintings from Rajastha, National gallery of Victoria,

आर्ष रामायण, लगभग १६५० ई०
राम रावण युद्ध दृष्य
ब्रिटिष लाइब्रेरी, लन्दन।

आर्ष रामायण, लगभग १६४६ ई.
राम–परषुराम संवाद
प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय, मुम्बई।

आर्ष रामायण, लगभग १६५१ ई०
दशरत द्वारा हल चलाना
प्राच्य विधा प्रतिष्ठान, जोधपुर

आर्ष रामायण, लगभग १६५२ ई०
कुम्भकरण को निंद्रा से जगाना
ब्रिटिष म्यूजियम, लन्दन।